 Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com/* https://doi.org/10.31995/shodhmanthan

उच्च एवं निम्न वर्ग के युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति, उनके कारणों तथा जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 श्रीमती रजनी दीक्षित
प्राचार्या, सर्वधर्म महाविद्यालय ग्वालियर

सारांश

किसी भी देश के विकास का भार देश की युवा पीढ़ी के कन्धों पर होता है। पं0 जवाहर लाल नेहरू के अनुसार,''हमारे देश के युवा ही कल के सुनहरे भारत के कर्णधार एवं ऊर्जा हैं।'' किन्तु नेहरू जी के कहे हुए ये शब्द आज की वर्तमान परिस्थितियों में बेमानी नजर आते हैं। आज भारत के अधिकांश कर्णधार अपनी शक्तियों से जूझने की शक्ति संजोने के बजाय, जीवन से पलायन पर विश्वास रखते हैं। वे कठिन परिस्थितियों में अपनी पीढ़ी को कम करने तथा जीवन की समस्याओं को झेलने के लिए अपनी ऊर्जा का प्रयोग करने के स्थान पर नशे के सेवन से सब कुछ भूलने का प्रयास करते हैं।

प्रस्तावना

किसी भी देश के विकास का भार देश की युवा पीढ़ी के कन्धों पर होता है। पं0 जवाहर लाल नेहरू के अनुसार,''हमारे देश के युवा ही कल के सुनहरे भारत के कर्णधार एवं ऊर्जा हैं।'' किन्तु नेहरू जी के कहे हुए ये शब्द आज की वर्तमान परिस्थितियों में बेमानी नजर आते हैं। आज भारत के अधिकांश कर्णधार अपनी शक्तियों से जूझने की शक्ति संजोने के बजाय, जीवन से पलायन पर विश्वास रखते हैं। वे कठिन परिस्थितियों में अपनी पीढ़ी को कम करने तथा जीवन की समस्याओं को झेलने के लिए अपनी ऊर्जा का प्रयोग करने के स्थान पर नशे के सेवन से सब कुछ भूलने का प्रयास करते हैं।

आज भारत का अधिकांश युवा वर्ग इस व्यसन का शिकार होकर अपने फौलादी सीने को छलनी कर रहा है। उसके कन्धे जो राष्ट्रबल का प्रतीक हैं, अपना बोझ उठाने में भी असमर्थ हैं। आजीवन शरीर को खोखला बनाने वाला यह मीठा जहर भारत के भविष्य एवं गौरवमयी संस्कृति, आदर्शों को कुचलता जा रहा है। नशीले पदार्थों के व्यसन कर्ताओं की संख्या में दिनोंदिन वृद्धि हो रही है और इसका षिकार हर आयुवर्ग के व्यक्ति चाहे वे उच्च वर्ग या निम्न वर्ग के शिक्षित हों या अशिक्षित सभी हो रहे हैं। देशी विदेशी शराब, सिगरेट, तम्बाकू, गुटखा, गांजा आदि मस्तिष्क की तन्त्रिकाओं को सुस्त एवं उत्तेजित करने वाली दवाईयों के सेवन से आज का युवावर्ग शारीरिक, मानसिक बीमारियों से ग्रस्त तो हो ही रहा है साथ ही अनेक सामाजिक दुष्परिणाम जैसे – चोरी, लूट, भ्रष्टाचार, बलात्कार, आत्महत्या, झूठ बोलना, कलह,

तनाव आदि के लिए भी उत्तरदायी है। अतः अनुभव किया गया कि ऐसे कारण जिनके वशीभूत होकर उच्च एवं निम्न वर्ग के युवा नशे की प्रवृत्ति को अपनाते हैं वह किस प्रकार का नशा तथा कितनी मात्रा में करते हैं तथा शिक्षा के माध्यम से इस बुराई को कैसे निपटा जा सकता है आदि प्रश्नों का उत्तर जानने हेतु उक्त शोध समस्या का चयन किया गया।

उद्देश्य

1. उच्च एवं निम्न वर्ग के युवाओं में नशे हेतु प्रयुक्त नशीले पदार्थों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्च एवं निम्न वर्ग के युवाओं में नशे के प्रवृत्ति के कारणों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. उच्च एवं निम्न वर्ग के युवाओं में नशे से होने वाले दुष्परिणामों की जानकारी के विषय में तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं

1. उच्च एवं निम्न वर्ग के युवाओं में नशे हेतु प्रयुक्त नशीले पदार्थों के प्रकारों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. उच्च एवं निम्न वर्ग के युवाओं में नशे क प्रवृत्ति के कारणों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. उच्च एवं निम्न वर्ग के युवाओं में नशे से होने वाले दुष्परिणामों की जानकारी में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

न्यादर्श

न्यादर्श में ग्वालियर शहर के 18 से 25 आयु वर्ग के नशे में लिप्त 100 उच्च वर्ग के तथा 100 निम्न वर्ग के युवाओं को सम्मिलित किया गया।

उपकरण

अध्ययन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया जिसे तीन खण्ड़ों में विभाजित किया गया। प्रथम खण्ड विभिन्न प्रकार के नशीले पदार्थों के सेवन से, द्वितीय खण्ड नशा लेने हेतु प्रेरित करने वाले कारणों से तथा तृतीय खण्ड नशे से होने वाले दुष्परिणामों की जानकारी से सम्बन्धित है।

विश्लेषण एवं व्याख्या तालिका –1

उच्च निम्न एवं कुल युवा वर्ग द्वारा लिये जाने वाले विभिन्न नषीले पदार्थों का तुलनात्मक प्रतिशत

क्र0 सं0	विभिन्न नषीले पदार्थ	उच्च वर्ग का %	निम्न वर्ग का %	कुल युवाओं का %
1	पान, गुटखा, तम्बाकू	56	66	61
2	बीड़ी	02	68	35
3	सिगरेट	64	24	44
4	शराब	61	74	67.5
5	अफीम, हेरोईन, चरस, गांजा	40	54	47
6	बिच्छु, सॉप से डसवाना, छिपकली खाना	04	24	14
7	आयोडेक्स, विक्स, जूता पालिस, नेल रिमूवर का सेवन करना	00	04	02

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च वर्ग में नशे लिप्त युवा 56 प्रतिशत पान, गुटखा, तम्बाकू, 64 प्रतिशत सिगरेट, 61 प्रतिशत शराब तथा 40 प्रतिशत अफीम गांजा, चरस आदि का सेवन करते हैं। केवल 2 प्रतिशत युवा ही बीड़ी तथा 41 प्रतिशत बिच्छू आदि का नशा करते हैं। जबकि निम्न वर्ग के युवाओं द्वारा सर्वाधिक 74 प्रतिशत शराब, 68 प्रतिशत बीड़ी, 66 प्रतिशत तम्बाकू, पान, गुटखा, 54 प्रतिशत अफीम, गांजा, चरस आदि का सेवन किया जाता है। केवल 24 प्रतिशत जहरीले जानवरों का प्रयोग नशे हेतु करते हैं। निम्न वर्ग के 4 प्रतिशत युवा दवाईयों, पालिस, नेल रिमूवर आदि का प्रयोग भी नशे हेतु करते हैं। कुल मिलाकर सर्वाधिक युवा शराब 67.5 प्रतिशत, तम्बाकू, गुटखा 56 प्रतिशत का सेवन करते हैं। सबसे कम जहरीले जानवरों 14 प्रतिषत तथा अन्य पदार्थों 2 प्रतिशत का प्रयोग नशे के रूप में किया जाता है।

तालिका 2

उच्च, निम्न एवं कुल युवा वर्ग में नशा लेने की प्रवृत्ति को प्रेरित करने वाले कारकों का तुलनात्मक प्रदर्शन

क्र0 सं0	क्षेत्र का नाम	उच्च वर्ग का सहमत%	निम्न वर्ग का सहमत%	कुल युवाओं का प्रतिषत%
1	मित्रता	53.2	67.6	60.4
2	मानसिक तनाव	50.7	54.9	52.8
3	पारिवारिक वातावरण	46.3	48.3	47.5
4	आधुनिक एवं भौतिकता	60.8	47.3	54
5	शारीरिक स्वास्थ्य, ऊर्जा	55.4	66.2	60.8

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च वर्ग अपने नशे की प्रवृत्ति के लिए आधुनिकता एवं भौतिकता 60.8 प्रतिशत, मित्रता 53.2 प्रतिशत तथा ऊर्जा प्राप्त करने हेतु 55. 4 प्रतिशत सम्बन्धी कारकों को अधिक उत्तरदायी मानता है। जबकि निम्न वर्गीय युवा मित्रता 67.6 प्रतिशत, ऊर्जा 66.2 प्रतिशत तथा मानसिक तनाव 54.9 प्रतिशत से सम्बन्धित कारकों को अपने नशे की प्रवृत्ति के लिए अधिक उत्तरदायी ठहराता है। कुल युवाओं में शारीरिक स्वास्थ्य एवं ऊर्जा 60.8 प्रतिशत तथा मित्रता 60.4 प्रतिशत को अपने नशे की प्रवृत्ति के लिए सर्वाधिक

उत्तरदायी माना है। जबकि पारिवारिक वातावरण को दोनों ही वर्ग के युवाओं ने कुल 47.5 प्रतिशत अपेक्षाकृत कम दोषी माना है।

तालिका –3

उच्च, निम्न एवं कुल युवा वर्ग में नशे से होने वाले दुष्परिणामों की जानकारी का तुलनात्मक अध्ययन

क0 सं0	नषे के दुष्परिणाम	उच्च वर्ग युवाओं का सहमत %	निम्न वर्ग युवाओं का सहमत%	कुल युवाओं का सहमत%
1	शारीरिक प्रभाव ¼टी0वी0, कैंसर, एड्स, अपंगता, मौत½	25	15	20
2	मानसिक प्रभाव ¼बौद्धिक क्षमता में कमी, शक्ति का ह्रास, आत्म हत्या½	5	2	3.5
3	पारिवारिक प्रभाव ¼झगडे, परिवार टूटना, बच्चों पर दुष्परिणाम, धन का दुरूपयोग½	17	19	18
4	सामाजिक प्रभाव ¼चोरी, डकैती, बलात्कार, हत्या½	9	3	6
5	राष्ट्रीय प्रभाव	2	1	1.5

उक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि अधिकांश नशे की प्रवृत्ति में लिप्त युवा होने वाले दुष्परिणामों से अनभिज्ञ हैं। केवल कुछ प्रतिशत युवा ही कुछ दुष्परिणामों को स्वीकार करते हैं। जिनसे शारीरिक दुष्प्रभाव के सन्दर्भ में उच्च वर्ग के 25 प्रतिशत तथा निम्न वर्ग के 15 प्रतिशत कुल 50 प्रतिशत युवा ही जानकारी रखते हैं। इसके साथ ही 18 प्रतिशत युवा जिसमे से 17 प्रतिशत उच्च वर्ग एवं 19 प्रतिशत निम्न वर्ग के पारिवारिक दुष्परिणामों जैसे तलाक, झगड़े, धन का दुरूपयोग आदि के सन्दर्भ में पूर्व जानकारी रखते हैं। मानसिक दुष्परिणामों को 5 प्रतिशत उच्च वर्ग के, 2 प्रतिशत निम्न वर्ग के तथा कुल 3.5 प्रतिशत युवा ही स्वीकार करते हैं। नशे के फलस्वरूप होने वाले सामाजिक एवं राष्ट्रीय दुष्परिणामों के विषय में क्रमशः कुल युवाओं का केवल 6 प्रतिशत तथा 1.5 प्रतिशत वर्ग ही जानकारी रखता है। नशे से होने वाले दुष्परिणामों के विषय में अधिकांश युवाओं का अनभिज्ञ होना ही उनमें नशे की प्रवृत्ति का एक महत्वपूर्ण कारण हो सकता है।

शैक्षिक कियान्वयन

आदिकाल से ही समाज में अनेक बुराइयों का जन्म हुआ है और उन्हें दूर करने में शिक्षा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अतः शिक्षा को माध्यम बनाकर युवाओं को नशाखोरी के भयावह परिणामों के प्रति चेतना तथा विकास आत्मविश्वास, आत्मविवेचना, विकासशील निर्णय लेने की क्षमता की ओर उन्मुख किया जा सकता है । इस हेतु शोधार्थी का सुझाव है कि शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर इस विषय से सम्बन्धित पाठ्यक्रम तैयार किये जायें जिनमें युवाओं के दृष्टिकोंण एवं मानसिकता में नशाखोरी के प्रति रूचि एवं आकर्षण के स्थान पर अरूचि एवं भय उत्पन्न किया

जा सके। साथ ही केन्द्र एवं राज्य सरकारों को नशे पर पूर्ण प्रतिबन्ध हेतु प्रतिबद्ध हो जाना चाहिए। समाजसेवी संस्थाओं एवं प्रबुद्ध वर्ग को भी नशा मुक्ति हेतु भरसक प्रयास करने होंगे तभी युवा नशे से मुक्ति का प्रयास सार्थक होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 कपिल एच0 के0 (1998) सांख्यिकीय के मूल तत्व, हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन कचहरी घाट, आगरा।

2 गुप्ता एस0 पी0 एवं (2000) स्टेटिस्टकल मैथड इन विहेवियरल साइंस, शारदा गुप्ता अलका पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

3 भटनागर सुरेश (1998) शिक्षा मनोविज्ञान, इण्टर नेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ।

4 भटनागर आर0 पी0,(2003) शिक्षा अनुसन्धान, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, एवं मीनाक्षी मेरठ।

5 माथुर एस0 एस0 (1998) स्वास्थ्य मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।